कार्यालय फाईल उपाध्याय

सरसंघचालक : मा. स. गोळवलकर सरकार्यवाह : प्र. ब. दाणी	॥ श्री ॥ **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** केन्द्र—**नागपुर**	दूरभाष क्र. २९०६ पत्रव्यवहार का पता :— **मा. स. गोळवलकर** डॉ. हेडगेवार भवन नागपुर २

पत्र क्रमांक १९८

दि. २ - १२ - १९६३

परममित्र श्री. जगदीश्वर जी -

सस्नेह वन्दे।

मान्यवर पं. दीनदयालजी भारत आनेपर मिले थे। उनका आपलोगोंके साथ का समय बहुत आनंदसे व्यतीत हुआ ऐसा कहते थे। आप जो कार्य वहां चला रहे हैं उसमें कुछ परिवर्तन करना आपको अति आवश्यक प्रतीत होना स्वाभाविक है। बहुत पहलेसे मैंने अपना सुझाव दिया था कि स्थानीय समाजकी विभिन्न जीवनकी आवश्यकताओं में सम्मिलित होकर उनकी पूर्ति के लिये उनके साथ स्वावलंबन सहयोग करना उचित होगा। आपकी बुद्धि और वहां अपना कार्य चलानेका स्वार्थ हेतु रखना ठीक नहीं। वहां का समाज जागृत हो रहा है, बहुत पिछड़ा हुआ था है परन्तु शिक्षा, उद्योग-व्यापार आदि जीवनावश्यक कामोंमें उसको बहुत प्रगति होना बाकी है। इस को पूर्ण करनेमें आपकी शक्ति बुद्धि आदि लगाना ठीक लगता है। वहां के मूल निवासी प्रायः स्वभावके नागरिक बनकर उसकी उन्नतिके लिये सरकारसे व्यवस्थित होना ठीक दिखता है। साथही अपना धर्म, शुद्ध संस्कार जीवनकी श्रेष्ठता, साहित्य आदिका अध्ययन, पालन एवं उसके विज्ञानवादी सिद्धांतों का स्थानीय समाजको परिचय कराना उसके प्रति श्रद्धा एवं ममत्व निर्माण करना आवश्यक है। इन कामों को करनेमें स्वयं कार्यको यदि आपलोग विश्वधर्म संघ जैसा नाम दें तो कैसा होगा? उसे इसीके प्राथमिकता

रहना अच्छा किन्तु उन संबंधों से यहां गुजरात प्रान्त के लोक जनमानस में कुछ संदेह हो सकेगा। यदि आप चाहें तो स्वयं प्रयत्न करूंगा।

विशाल हृदय, धैर्य, निर्भयता तथा शुद्ध नियत से सब का मुसलमानादि से मेल रखना, स्थानीय समाज के साथ आत्मीयता से चलने से सब अच्छा हो सकेगा ऐसा मुझे विश्वास है। आगे जैसा आप उचित समझें।

यहां सब बंधु सानन्द हैं। आप सबकी कुशलता की शुभकामनाओं में प्रार्थना करता हूं। शेष।

भवदीय

मा. स. गोळवलकर